Hindi Elective (002)

Space for writing Question Number

Space for writing Question Number

हिन्दी (ऐच्छिक)

1. (i) (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(ii) (B) उम्रदराज लोगों की संख्या बढ़ रही है।

(iii) (A) पचास वर्ष से ऊपर की आबादी

(iv) श्रमबल की कमी का कारण यह कि अधिकांश दुनिया बूढ़ी होती जा रही है। साथ ही जन्म-दर में गिरावट आना भी इसका एक कारण है।

(v) दिमागी सक्रियता का स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जो दिमाग सक्रिय रहता है, वह समस्याओं को सुलझाने और दूसरों के साथ बातचीत करने का आदी होता है। इसके कारण उम्र का नकारात्मक प्रभाव उस पर तुलनात्मक रूप से धीमा होता है।

Space for writing Question Number

(vi) कारोबारी क्षेत्र में श्रमबल की कमी को दूर करने का पारंपरिक तरीका उम्र के अंतर को पाटने के लिए प्रवासन था। वर्तमान में यह अपनी लोकप्रियता इसलिए खो रहा है क्योंकि यह अब राजनीतिक मसला बनने लगा है। इसका अर्थ है लोगों के स्तर का विभाजन व पुनर्स्थापन करना।

(vii) रजत पीढ़ी के कार्य क्षेत्र में लौटने के कई सामाजिक लाभ हैं। जैसे वृद्ध लोगों का स्वास्थ्य सेवाओं पर खर्च कम होता है क्योंकि दिमाग सक्रिय रहने के कारण उनका स्वास्थ्य कुशल रहता है। स्वस्थ रहने की भावना शरीर पर भी सकारात्मक असर डालती है और बाहरी सहायता की ज़रूरत कम पड़ती है।

2. (i) (1) लोग पड़ोस के सुख-दुख के प्रति उदासीन और अनजान बन चुके हैं।

½

Space for writing Question Number

(ii) (d) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की उचित व्याख्या नहीं करता है।

(iii) ~~(b) II और~~ III

(iv) पुराने समय के लोग आपस में सामान का लेन-देन करते हुए यह आग्रह करते थे कि उनके द्वारा सौंपी गई वस्तु को ध्यान से व एहतियात से ले जाया जाए।

(v) कवि को लगता है कि हमारा पड़ोस खत्म होता जा रहा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अब लोगों को अपने पड़ोसियों पर भरोसा नहीं रह गया है, वे अपना घर भी उनकी देखरेख में नहीं छोड़ना चाहते।
पड़ोसियों को एक-दूसरे की कुशलता या जीवन-शैली के विषय में भी कुछ ज्ञात नहीं होता।

(vi) आस-पड़ोस में मेल-जोल न रहने के ~~कुछ~~ अनेक दुष्प्रभाव हैं।

Space for writing Question Number

लोगों के पास दुख-सुख बाँटने वाला कोई नहीं होता।

लोग इस प्रकार अपने जीवन को समेटकर, स्वार्थ की ओर अग्रसर होते हैं व दूसरों की कुशलता के विषय में विचार भी नहीं करते।

खण्ड ख

उत्तर-3:(क) यह सत्य है कि आज के समय में प्रिंट या मुद्रित माध्यमों का महत्त्व बचा हुआ है। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रिंट ही वह साधन है जिसके द्वारा स्थाई व अत्यंत विश्वसनीय सूचना प्राप्त की जा सकती है। इसमें छपे समाचार स्थाई होते हैं व इसका प्रयोग भाषा-विस्तार या भाषा ज्ञान बढ़ाने के लिए भी किया जाता है।

उत्तर-3:(ख) फ़ीचर लेखन एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक एवं आत्मनिष्ठ लेखन है। एक अच्छे और रोचक फ़ीचर में निम्नलिखित विशेषताएँ होनी चाहिए।

- उसमें प्रारंभ, मध्य और अंत अवश्य होना चाहिए।
- कथात्मक शैली का प्रयोग होना चाहिए।

पात्रों की मौजूदगी से सजीवता का निर्माण किया जा सकता है।
फ़ोटो, ग्राफ़िक्स आदि का प्रयोग करना चाहिए।
फ़ीचर के अंत में भविष्य की योजनाओं पर प्रकाश डालना चाहिए।

उत्तर-8.(ग) किसी खास विषय पर सामान्य से हटकर किया जाने वाला लेखन विशेष लेखन कहलाता है।
विशेष के कई क्षेत्र होते हैं, जैसे - अर्थ व्यवस्था, अपराध, फ़िल्म जगत, खेल जगत, आदि।

(1.) अर्थ व्यवस्था - विशेष लेखन के इस क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल करने के लिए लेखन को कुशल अर्थ-संबंधी ज्ञान होना चाहिए। उसे अन्यान्य अच्छे विशेष लेख पढ़ने चाहिए जो इस क्षेत्र से संबंधित हों। क्षेत्र के अनुसार तकनीकी भाषा का प्रयोग करना चाहिए। (जैसे - तेजड़िए, आयात-निर्यात, आदि।)

(2.) ~~प्र~~ खेल जगत - इस क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल करने हेतु

Space for writing Question Number

लेखक को किसी निश्चित खेल का ~~ज्ञान~~ कुशल ज्ञान होना चाहिए। उस खेल की पृष्ठभूमि व वर्तमान स्थिति के विषय में भी जानकारी होनी चाहिए। क्षेत्र से संबंधित तकनीकी शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। (जैसे - क्रिकेट, गोल, रन आदि)

उत्तर-4:(क) जनसंचार के विभिन्न माध्यम इस प्रकार हैं-

① मुद्रित माध्यम - यह जनसंचार का सबसे प्राचीन माध्यम है। इसमें सूचनाओं आदि को छापकर प्रसारित किया जाता है।

खूबियाँ → मुद्रित माध्यम में छपी सूचनाएँ स्थाई होती हैं। इन्हें सहेजकर भी रखा जा सकता है।
इसके पाठन से भाषा ज्ञान भी बढ़ता है।

② रेडियो - रेडियो एक श्रव्य माध्यम है।

खूबियाँ → यह निरक्षरों व साक्षरों, दोनों के लिए उपयोगी है।
इसे कहीं भी, कभी भी सुना जा सकता है।

③ इंटरनेट → यह जनसंचार का नवीनतम माध्यम है।

खूबियाँ → यह दृश्य व श्रव्य माध्यम है। इसमें ये दोनों गुण उपस्थित हैं।

यह पोर्टेबल है, अर्थात् इसे कहीं भी और कभी भी उपयोग किया जा सकता है।

इसके समाचारों व सूचनाओं की पुष्टि करना अति सरल है।

उत्तर-4 (ख) समाचार लेखन की छह ककारें इस प्रकार हैं:-

1. क्या
2. कब
3. किसके साथ
4. कैसे
5. क्यों

~~कौन~~

6. कहाँ

इस समाचार लेखन में इन छह ककारों का जवाब देने

Space for writing Question Number

की कोशिश की जाती है। इन जवाबों से पाठकों अथवा दर्शकों को अवगत कराना लेखक अथवा पत्रकार का उत्तरदायित्व होता है।

इनके उत्तर से यह ज्ञात होता है कि क्या घटना घटित हुई है और वह कब, कहाँ और किसके साथ घटित हुई है। घटना की तह तक पहुँचने से यह भी ज्ञात होता है कि घटना क्यों और और कैसे घटित हुई।

Space for writing Question Number

अनुच्छेद

उत्तर-5

अभिनेता एक जीवन में कई जीवन जीते हैं

एक पात्र में जीवंतता व विश्वसनीयता का गुण विकसित करने हेतु अभिनेता को उस काल्पनिक पात्र के रूप में ही जन्म लेना पड़ता है। अपने अंतरमन को उस पात्र के अंतरमन का प्रतिबिंब बनाना पड़ता है। ऐसा करने पर ही लेखक द्वारा निर्मित पात्र सजीव होकर दर्शकों के मन पर अपनी अमिट छाप छोड़ पाता है। इस प्रकार हर नए पात्र के अभिनय के साथ न्याय करने के लिए अभिनेता को वास्तव में अपने एक जीवन में कई जीवन जीने पड़ते हैं। जब अभिनेता पात्र को पूर्ण निष्ठा के साथ जीकर अभिनय कर रहा होता होता, तब दर्शक भी उस पात्र के मन में चल रहे द्वंद्व अथवा उसके मन की पीड़ा या अन्य भावों को समझ पाने के साथ ही उन भावों को महसूस भी कर पाते हैं। एक कुशल अभिनेता दर्शकों को यह भूलने पर विवश कर देता है कि वह पात्र

Space for writing Question Number

केवल मिथ्या अथवा कल्पना है। अभिनेता अपने द्वारा जिए गए पात्र को एक वास्तविक व्यक्ति के रूप में स्थापित कर देता है। वह अपने अभिनय के दौरान स्वयं को पूर्णतः त्याग देता है। यही कारण है कि दर्शकों को उस अभिनय में क्षणभर के लिए भी अभिनेता की झलक मात्र भी नहीं दिखती। अभिनेताओं का यह संघर्ष व कला के प्रति उनका समर्पण सराहनीय है।

उत्तर-6: (ख) कहानी एक महत्वपूर्ण गद्य विधा है।
इसे रोचक बनाए रखने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए। कहानी के इन तत्वों की पुष्टि पाठ्यपुस्तक अंतरा भाग-2 में संकलित कहानी "सूरदास की झोंपड़ी" के उदाहरण से की जा सकती है।

① द्वंद्व के तत्व- कहानी को रोचक बनाए रखने के लिए उसमें किन्हीं विचारों अथवा पात्रों के मध्य द्वंद्व के तत्व होने चाहिए।
जैसे- सूरदास और भैरो दोनों पात्रों के मध्य द्वंद्व उपस्थित था। इसके अतिरिक्त सूरदास के मन की विडम्बा भी उपस्थित थी।

② संवाद- संवाद का कहानी में अत्यधिक महत्व है। संवाद भावानुकूल व पात्रनुकूल होने चाहिए। संवादों के माध्यम से ही कहानीकार पात्रों का चरित्र बखान करता है।
जैसे- सूरदास का संवाद- "तो हम सौ लाख बार झोपड़ी बनाएंगे" उसके पात्र के क्षमाशीलता व पात्र की

Space for writing Question Number

परिपक्वता को दर्शाता है।

इसके अतिरिक्त एक कुशल कथानक (कहानी का प्रारंभिक नक्शा, जिसमें प्रारंभ, मध्य, अंत व द्वंद्व के तत्व हों), रोचक पात्र, चरम उत्कर्ष (क्लाइमैक्स) भी कहानी को रोचक बनाते हैं। ये सभी 'सूरदास की झोपड़ी' कहानी में भी उपस्थित हैं।

उत्तर-७ (ग) कवि जब अपने मन में उपजे भावों, संवेगों या विचारों को अलंकारों, शब्दों, आदि के सूत्र में पिरोता है, तो कविता की रचना होती है।

कविता-लेखन के संदर्भ में दो मत मिलते हैं।

1. प्रथम मत के अनुसार कविता को अन्य कलाओं की भाँति सीखा नहीं जा सकता, अर्थात इसका प्रशिक्षण नहीं दिया जाता।

2. दूसरे मत के अनुसार अन्य कलाओं की भाँति कविता को भी कुशल प्रशिक्षण से समझा व बेहतर

Space for writing Question Number

किया जा सकता है।

मैं दूसरे मत का समर्थन करती हूँ, क्योंकि मैं मानती हूँ कि अभ्यास व कुशल मार्गदर्शन द्वारा किसी भी कला को अपना बनाया जा सकता है।

निरंतर , अनथक प्रयासों व एकाग्रता के साथ यदि कोई किसी कला के प्रति समर्पित हो जाए, तो वह इसमें पारंगत हो सकता है।

खण्ड -ग

7. (i) (C) II और III, सही हैं।

(ii) (B) उल्लास और प्रसन्नता के चरम उत्कर्ष में अचानक दुख का स्मरण हो आना

Space for writing Question Number

(iii) (D) चित्र के समान स्थिर और अवाक् खड़ी रह जाती हैं।

(iv) (C) (D) ~~कथन सही है और कारण कथन की उचित व्याख्या करता है।~~

(v) (A) राम-वनगमन के बाद माँ कौशल्या की विरह वेदना

उत्तर 8: (ख) कविता 'तोड़ो' एक उद्बोधनपरक कविता है। इस कविता में कवि 'रघुवीर सहाय' ने अकर्मण्या' व 'किंकर्तव्यविमूढ़ता' के झूठे बंधनों को तोड़ने की बात कही है। जो सृजन की प्रक्रिया में बाधक होते हैं। मन की ऊब व खीज के हटने पर ही व्यक्ति सृजनशील हो पाएगा।

कवि ने धरती को उर्वरा व रस से परिपूरित माना है, किंतु धरती के ऊपर की बंजर धरा को तोड़ने के पश्चात ही धरती उर्वरा बन पाएगी और सृजन में सक्षम होगी। कवि के अनुसार धरती में पोषण निहित है। इसे मात्र उजागर करने की आवश्यकता है। ठीक इसी प्रकार मन में

Space for writing Question Number

भी गुण व योग्यता है, केवल उसकी ऊब व अकर्मण्यता को हटाने की आवश्यकता है। कवि ने इस कविता में सृजन विध्वंस की बात नहीं की, अपितु नवसृजन का मार्ग दर्शाया है।

उत्तर-8.(ग) विद्यापति के पदों में वर्णित विरह से संतप्त नायिका शय्या की दशा अत्यधिक दयनीय व पीड़ामय है। श्री कृष्ण के मथुरा छोड़कर चले जाने पर नायिका उनके विरह में जीवंतता के लक्षणों के बिना अति क्षीण हो गई हैं। वे प्रकृति में व्याप्त फूलों की सुंदरता देखकर अथवा भँवरे की ध्वनि सुनकर अपने कान व आँखें बंद कर लेती हैं। उनका शरीर चौदस के चाँद की भाँति प्रतिदिन क्षीण होता जा रहा है और प्रियतम विरह में उनकी आँखों से निरंतर अश्रुधारा बहे जा रही है।

नायिका के प्रति मेरे मन में दया, सम्मान, करुणा व सहानुभूति के भाव उभरते हैं। उनकी स्थिति के प्रति दया व करुणा के साथ ही उनके पावन, निश्छल व

शाश्वत ~~प्र~~ प्रेम के प्रति सम्मान भी मन में उत्पन्न होता है।

उत्तर - 8 (ख)

<u>सप्रसंग व्याख्या</u>

<u>संकेत</u> ⇒ कविता- 'बारहमासा' (पद्मावत' में उद्धृत)
कवि - 'मलिक मुहम्मद जायसी'
पुस्तक - पाठ्यपुस्तक - 'अंतरा भाग -2'

<u>प्रसंग</u> ⇒ प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने राजा रत्नसेन के सिंहल देश चले जाने पर उनकी पत्नी नायिका नागमती की विरह - वेदना का मार्मिक वर्णन किया है। इस काव्यांश में अगहन मास में नायिका के हृदय की असहनीय पीड़ा का चित्रण किया गया है।

<u>व्याख्या</u> ⇒ अगहन मास में दिन और रात्रि की असमान

मवधि के कारण नायिका की विरह-वेदना बढ़ जाती है। अगहन में रातें लंबी और दिन छोटे होते हैं। प्रियतम के विरह में नायिका से ये लंबी रातें काटे नहीं कट पा रही। वह विरहाग्नि में दिए की बाँति की तरह जल रही है। नायिका कहती हैं कि शीत से उनका हृदय काँप रहा है। रात्रि में सखियाँ भी साथ नहीं होती। ऐसे में उनका दुख बढ़ जाता है। वे कहती हैं कि सभी नर-नारी नए-नए परिधानों से स्वयं का रूप-रंग निखार रहे हैं, किंतु उनका रूप-रंग तो प्रियतम संग ले गए। यदि वे अभी भी लौट आएँ तो नायिका का रूप-सौंदर्य भी लौट आए। वे कहती हैं कि विरह रूपी अग्नि उनके हृदय को जला रही है। इस अग्नि में उनका यौवन ही नहीं अपितु जीवन भी भस्म हो रहा है।

नायिका काक और भँवरे को प्रियतम तक यह संदेश पहुँचाने को कहती हैं कि वे विरह-अग्नि में जल कर मर गई हैं और उनकी चिता से उठने वाले धुँए से ही वे दोनों काले हुए हैं।

विशेष ⇒ भाषा - संस्कृतनिष्ठ - अवधी
रस - वियोग - शृंगार

अलंकार - दूभर दुख
बिमि कादी
रूप रंग
जोबन जनम → अनुप्रास अलंकार

'घर - घर', 'फिरैं फिरैं' में
पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार
दोहे में अतिशयोक्ति अलंकार

छंद - दोहा - चौपाई में कड़वक छंद
शैली - प्रबंध काव्य में गाथागति शैली

भाव पक्ष - प्रियतम विरह में व्याकुल नायिका नागमती की पीड़ा का हृदय - विदारक चित्रण किया गया है।

10. (i) (A) फ़सल नहीं बँटी, हाथी ने पूरी फसल पर कब्ज़ा कर लिया।

(ii) (C) कथन व कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की उचित व्याख्या करता है।

(iii) (C) उसके मन में फ़सल के बँटवारे को लेकर साफगोई नहीं थी।

(iv) (C) I और II दोनों

(v) (B) प्रभुत्वशाली वर्ग का

उत्तर-11 (क) पाठ 'जहाँ कोई वापसी नहीं' लेखक 'निर्मल वर्मा' द्वारा रचित है। पाठ में औद्योगिक विकास से उपजे विनाश पर प्रकाश डाला गया है। लेखक ने आधुनिक युग के शरणार्थी उन लोगों को कहा है जो औद्योगिक विकास के कारण

अपने परिवेश से उन्मूलित कर दिए गए हैं। इतिहास द्वारा विस्थापित ये लोग कभी पुन: अपने परिवेश व समृद्ध जीवन की ओर नहीं लौट सकते। ये शरणार्थी प्रकृति की गोद से उन्मूलित होकर बड़े-बड़े शहरों की घुटन वाली बस्तियों या स्लम्स में रहते हैं, जहाँ ये दयनीय जीवन जीते हैं, जिसमें जीवित रहना ही एक संघर्ष है।

उत्तर-11. (ग) पाठ 'दूसरा देवदास' लेखिका 'ममता कालिया' द्वारा रचित है। पाठ में जब संभव यौवनावस्था के आकर्षण व प्रेम भाव ~~की~~ के कारण बेचैन था, तब उसकी नानी उसको लेकर चिंतित हो ~~ह~~ गई। ऐसा इसलिए था क्योंकि उस अज्ञातयौवना से पुनर्मिलन की उत्कंठा व बेचैनी के कारण संभव न तो ठीक से सो पा रहा था और न ही ~~उ~~ पर्याप्त भोजन ग्रहण कर रहा था। इस तरह का व्यवहार बुज़ुर्गों के स्वभाव को उजागर करता है। वे सदैव अपने ~~बच्चे~~ बच्चों की चिंता करते रहते हैं व ~~उ~~ उनकी कुशलता की कामना करते हैं। वे किसी बालक के समान भावुक होते हैं और अपने

Space for writing Question Number

प्रियजनों के उद्धार की कामना करते हैं।

उत्तर-1(ख) सप्रसंग व्याख्या

संकेत ⇒ पाठ- कुटज
लेखक- हजारी प्रसाद द्विवेदी
पुस्तक- पाठ्यपुस्तक - 'अंतरा -भाग -2'

प्रसंग ⇒ प्रस्तुत गद्यांश 'कुटज' पौधे के गुणों का बखान किया गया है। साथ ही कवियों द्वारा इसके अवमानित होने के कारणों पर भी प्रकाश डाला गया है।

व्याख्या ⇒ लेखक कहते हैं कि कुटज एक गुणी, सुंदर व प्रेरणादायक पौधा है, जो इतना बुरा नहीं है कि इसे कवियों द्वारा अवमानित किया जाए। यह सम्मान का पात्र है क्योंकि यह कालिदास जैसे महान व्यक्ति के

Space for writing Question Number

काम आया था। जब कालिदास को श्राप से मुक्ति के लिए मेघ की अभ्यर्थना करनी थी, तब कुटज ही उनके काम आया। यह 'गाढ़े का साथी' है। लेखक विचार करते हैं कि रहीम जैसे करुणामय और प्रतिभाशाली कवि द्वारा कुटज के अपमानित का क्या कारण हो सकता है। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि दुनिया की स्वार्थमय प्रवृत्ति व क्रूरता से विचलित होकर रहीम ने ऐसा किया होगा। एक बादशाह से अपमान मिलने पर कदाचित उन पर ऐसी वितृष्णा सवार हुई होगी कि उन्होंने अनेक गुणों के स्वामी कुटज को मात्र छाया न दे पाने के कारण अपमानित करने की गलती कर दी। लोगों की बेरुखी या बेकद्रदानी से विचलित मनः स्थिति में उन्होंने ऐसा किया होगा।

विशेष → भाषा सरल, सहज व प्रांजल है।

गद्य शैली की उपस्थिति है।

ग्रंथ शैली भी उपस्थित है।

तत्सम प्रधान शब्दावली में कुशल भावाभिव्यक्ति की गई है।

कुटज - अकुतोभया वृत्ति व अपराजित जीवनी शक्ति का प्रतीक है।

कुटज के माध्यम से अविचल जीवन शक्ति के महत्व को उजागर किया गया है।

पाठ में मानव जीवन के लिए उपयोग मूल्यों की व्याख्या की गई है।

Space for writing Question Number

उत्तर -13: पाठ 'सूरदास की झोंपड़ी' लेखक 'प्रेमचंद' द्वारा रचित है। इस पाठ में के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि बिषम परिस्थितियों में भी हार नहीं माननी चाहिए। इससे क्षमाशीलता का संदेश भी मिलता है।

सुभागी भैरों की पत्नी थी, जिसे वह मानसिक व शारीरिक यातना देता था। भैरों ने ईर्षा और प्रतिशोध के मंतव्य से सूरदास की के संपूर्ण जीवन का संचित धन चुरा लिया और उसकी झोंपड़ी में आग लगा दी। भैरों ने सूरदास व सुभागी के चरित्र पर भी प्रश्न उठाए। सुभागी को स्वयं की चिंता न थी, किंतु उसे यह बात कष्ट दे रही थी कि सूरदास की स्थिति उसके पति के कारण इतनी दयनीय हो गई थी। वह जानती थी कि आग भैरों ने लगाई थी, और वह सूरदास को इसी तथ्य से अवगत कराने उसके पास गई थी। सुभागी सूरदास की हर संभव सहायता करना चाहती थी, इसलिए उसने भैरों के पास जाने का निर्णय लिया, ताकि वह सूरदास का धन उसे पुनः लौटा सके। वह स्वयं हर प्रकार की यातना व कष्ट

Space for writing Question Number

कष्ट भोगने को सज्ज थी। भैरो के साथ रहकर मिलने वाली यातनाओं से वह भयभीत न हुई। सुभागी के इस निर्णय से उसके अनेक गुण उजागर होता है। वह बहादुर, दृढ़-निश्चयी, साहसी व परमार्थी स्त्री थी जो स्वयं की सुरक्षा से भी पूर्व दूसरों के हित के विषय में विचार करती थी।

उत्तर-14) (अ) पाठ 'अपना मालवा- खाऊ-उजाड़ू सभ्यता में' लेखक 'प्रभाष जोशी' द्वारा रचित है। इस पाठ के माध्यम से लेखक ने औद्योगिक विकास से उत्पन्न विनाश व आधुनिक काल की अपसभ्यता को उजागर किया है। लेखक की पर्यावरण संबंधी चिंताएँ मालवा तक सीमित न रहकर सार्वभौमिक हो गई हैं।

पहले के मालवा में संपन्नता व समृद्धि विद्यमान थी। वहाँ की नदियाँ जीवंत थी व साफ थी। मालवा कभी सूखा नहीं पड़ा। पहले के मालवा का बखान उसके संदर्भ में ~~प्रयुक्त~~ प्रयुक्त कहावत करती थी - "मालवा

Space for writing Question Number

धरती गहन-गंभीर, पग-पग रोटी, डग-डग नीरा' यह स्थान स्वयं परिपूर्ण रहने के साथ ही दूसरे प्रदेशों की सहायता करने में भी सक्षम था।
वर्तमान में मालवा की दशा पूर्व से विपरीत हो गई है। 'नदी नाले सूख गए, पग-पग नीर वाला मालवा सूखा हो गया।' नदियों व अन्य जल स्रोतों में गाद या गंद भरने के कारण साधारण वर्षा होने पर भी बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। औद्योगिक विकास के कारण मालवा की नदियाँ प्रदूषित हो गई हैं।
इस विडम्बना का कारण यूरोप और अमेरिका की खाऊ-उजाड़ू जीवन पद्धति है, क्योंकि सर्वाधिक कार्बनडाइऑक्साइड गैसें यहीं से निकलती हैं। ये गैसें धरती के तापमान के तीन डिग्री सेल्सीयस तक बढ़ने का कारण हैं। इसी कारण असमान वर्षा, असंतुलित मौसम-चक्र, आदि समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं जो मालवा के साथ-साथ संपूर्ण सृष्टि के विध्वंस को तत्पर हैं। अतः मालवा प्रदेश संपन्नता से विनाश

की ओर अग्रसर हो रहा है और इसका कारण वर्तमान की खाऊ-उजाड़ू जीवन पद्धति व प्रकृति का निरंतर हो रहा शोषण है।